RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-11
November-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

आंचलिक हिंदी पत्रकारिता में साहित्य

सुदीप शुक्ला

शोधार्थी, एस.एस.एल. जैन पीजी कॉलेज विदिशा

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 30 November 2017

Keywords
आंचलिक हिंदी पत्रकारिता, बाजारवाद, विज्ञापनवादी

ABSTRACT

प्रसिद्ध उक्ति है कि 'साहित्य समाज का दर्पण है।' किसी भी समाज को हम उसके साहित्य से जान सकते हैं। साहित्य का प्रकाशन पुस्तकों के साथ पत्र–पत्रिकाओं में भी होता है। आंचलिक हिंदी पत्रकारिता के आरंभ से पिछले एक–डेढ़ दशक तक समाचार पत्र–पत्रिकाओं की प्रतिष्ठा इस बात से भी होती थी कि वह किस प्रकार का साहित्य प्रकाशित करते हैं। अब बाजारवाद और विज्ञापनवादी युग में साहित्य का कोना समाचार पत्र पत्रिकाओं से सिमटता जा रहा है। प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं अब सप्ताह में 1–2 कविता कहानी ही पाठकों को पढ़ने मिल रहे हैं। यह स्थिति साहित्य के लिए तो चिंताजनक है ही साथ ही समाचार पत्र पत्रिकाओं के लिए भी चिंता का कारण है।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में गद्य के साथ ही हिंदी पत्रकारिता का आरंभ और शनै: शनै: विकास हुआ है। पत्रकारिता के दो रूप हमारे समक्ष आते हैं। एक वह जो महानगरों से निकलने वाले स्थानीय संस्करण के समाचार पत्र, पत्रिकाओं की पत्रकारिता है। वही दूसरी ओर अंचल के ग्राम, कस्बों नगर और जिला मुख्यालय तक प्रसारित होने वाली समाचार पत्र पत्रिकाएं हैं, जिन्हें हम आंचलिक पत्रकारिता की अंतर्गत रखते हैं। इस शोध पत्र में हम आंचलिक पत्र पत्रिकाओं में साहित्य की स्थिति का अध्ययन करेंगे। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में आने वाली कविता कहानी एवं साहित्य की अन्य विधाओं की सामग्री सहित साहित्यिक जगत के समाचारों का अवलोकन कर स्थिति को समझने का यह प्रयास है।

व्याख्या

साहित्य के बिना किसी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्य और पत्रिका समान रूप से साथ चलते 'पत्रकारिता समाज के विचारों का प्रतिबिंब है और साहित्य की संवाहिका।'[1] मध्य प्रदेश के हिंदी समाचार पत्र, पत्रिका के अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट होता है कि अब समाचार पत्र-पत्रिकाओं का ध्यान साहित्यिक सामग्री के प्रकाशन की ओर निरंतर रूप से कम होता जा रहा है। आंचलिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में साहित्यिक गतिविधियां यथा- अंचल में होने वाली कवि गोष्ठी, परिचर्चा, सम्मान समारोह, हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़े पर आयोजन, साहित्यकारों की जयंती, पुण्यतिथि पर स्मरण एवं आयोजन आदि के समाचार होते हैं। इन समाचारों में कोई गंभीर साहित्य विमर्श न भी हो तब भी भाषा एवं साहित्य की सूचना संबंधित सरोकार तो होते ही हैं। शासकीय स्तर पर होने वाले ऐसे आयोजन संबंधित विभाग विशेषकर शिक्षा एवं उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित किए जाते हैं। केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों के स्थानीय कार्यालय हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी मास, राजभाषा, राजभाषा दिवस जैसे अवसरों पर हिंदी से जुड़े कुछ कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन कार्यक्रमों में औपचारिकता भर दृष्टिगोचर होती है इनमें गंभीर साहित्य चिंतन एवं रचनाधर्मिता का अभाव ही दिखाई देता है तथापि यह कार्यक्रम दैनिक एवं साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं के लिए समाचार तो होते ही हैं। इन समाचारों को अंचल के दैनिक एवं साप्ताहिक पत्र, पत्रिकाओं में स्थान मिल जाता है।

आंचलिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन में एक और बात दृष्टिगोचर होती है कि साहित्यिक समाचारों में पाठकों को कुछ विशेष पठनीय सामग्री नहीं मिल पाती है। प्रायः यह समाचार शुष्कता लिए हुए होते हैं। इनसे पाठकों को साहित्यिक दृष्टि से कुछ विशेष प्राप्ति नहीं होती है। यथा कवि सम्मेलन अथवा कवि गोष्ठी की रिपोर्टिंग न करके प्रेस विज्ञप्ति आधारित समाचार ही प्रकाशित किए जाते हैं। परिणाम यह होता है कि समाचार में अमुक कवि ने यह रचना पाठ किया ऐसा लिखकर आधी एक पंक्ति लिख दी जाती है ऐसे में कई बार काव्य का रुप ही बदल जाता है। कभी-कभी पाठक के मन में यह जिज्ञासा भी रह जाती है कि आधी पंक्ति के बाद अगली पंक्ति अथवा उसकी संवेदना क्या होगी। ऐसे कार्यक्रमों के प्रेस विज्ञप्ति का तरीका भी लगभग हर बार एक सा होता है ऐसे कार्यक्रमों के समाचारों में कई बार लगभग एक सी बातें ही लिखी जाती हैं। यथा श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए, तालियों की गड़गड़ाहट से कार्यक्रम स्थल गूंज उठा, श्रोताओं ने अमुक रचना की खूब

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सराहना की, पूरी रात श्रोता कवि सम्मेलन का आनंद लेते रहे, फिर भी श्रोता उठने को तैयार न थे, अमुक कवि की रचना ने श्रोताओं में अमुक रस (प्रायः: वीर रस) का संचार कर दिया, अमुक हास्य कवि ने खूब गुदगुदाया आदि। ऐसे घिसे पिटे वाक्य के कवि गोष्ठी अथवा कवि सम्मेलनों के समाचारों में बारंबार आवृत्ति होने से इन समाचारों के प्रति पाठकों में जब ही पैदा होती है। सरकारी आयोजनों में वक्ताओं एवं अतिथियों के विचार भी लंबे-लंबे छापे जाते हैं। मानो समाचार प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य यही है। यद्यपि कोई नई बात अथवा जानकारी न होकर समाचारों में प्रायः सामान्य सी बातें ही बोली जाती हैं। साहित्यिक समाचारों का गद्य भी लचर एवं कई बार दोषपूर्ण होता है ऐसे समाचारों की विशेष पठनीयता नहीं होती। इनमें केवल संबंधित क्षेत्र के साहित्य अथवा सरकारी विभाग से जुड़े व्यक्तियों की रुचि भर रह जाती है। समाचार पत्र प्रबंधन अपने सर्वे आदि से यह तथ्य जुटाते रहते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि नगरीय समाचार पत्रों ने अवश्य या तो ऐसे समाचार लिखे जाने का तरीका बदलकर उन्हें सुरुचिपूर्ण बनाया है अथवा इन्हीं छापना ही बंद कर दिया है।

मध्यप्रदेश के अंचल में प्रायः जिला स्तर पर समाचार पत्रों के चार-चार पृष्ठों वाले आंचलिक संस्करण निकलते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य स्थानीय दैनिक एवं कुछ साप्ताहिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होते हैं। इन्हें समाचार पत्रों में विज्ञापनों का दबाव कम होने से साहित्य के उपरोक्त उल्लेखित समाचार भी सामान्यतः स्थान पा जाते हैं। इसके पश्चात भी ऐसे साहित्यिक समाचारों के शीर्षक तक इतने रुचि पूर्ण नहीं होते कि पाठक ऐसे समाचारों को पढ़ने के लिए उन्मुख हो। शीर्षकों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है की इस प्रकार के रूढ़ शीर्षक का प्रयोग किया जाता है यथा किया रचना पाठ कोमा मंच से देर तक पढ़ी गई कविताएं कोमा देशभक्ति से ओतप्रोत रचनाओं पर गूंजी तालियां आदि जड़ शीर्षक समाचारों की पठनीयता में बाधक होते हैं। इसी प्रकार जयंती एवं स्मरण कार्यक्रमों में मुख साहित्यकार को किया याद, प्रमुख साहित्यकार की आदर्शो पर चलें, अमुक साहित्यकार के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर हुई चर्चा जैसे बेहद सतही शीर्षक ऐसे आयोजनों के समाचारों का आकर्षण एवं पठनीयता छीन लेते हैं। न केवल इतना ही बल्कि ऐसे आयोजनों के समाचारों में केवल अतिथि वक्तव्य, उपस्थित प्रमुख लोगों के नाम, स्वागत आदि का उल्लेख होता है। प्रायः जिस साहित्यकार पर केंद्रित कार्यक्रम है, उनके जीवन एवं कृतित्व पर कोई सारगर्भित चर्चा समाचारों में नहीं होती। केवल आंचलिक समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों एवं संवाददाताओं की ही नहीं बल्कि यह आंचलिक रचनाकारों के लिए भी कहीं अधिक बड़ी चुनौती है। 'हिंदी रचनाशीलता के लिए चुनौती बाहर से नहीं, उसके अपने भीतर से भी है। गत दो-तीन दशकों की साहित्यिक सक्रियता पाठक से पूरी तरह से कटी हुई सक्रियता है।'[2] यही बात साहित्य जगत के समाचारों के पत्रों में स्थान एवं पठनीयता पर भी उतनी ही गंभीरता से लागू होती है।

साहित्यकार और पत्रकार की समाज के प्रति भूमिका अति विशेष है। दोनों ही समाज को ठीक दिशा में ले जाने हेतु कार्य कर सकते हैं। 'साहित्यकार समाज का सजग प्रहरी और पत्रकार प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ है। पत्रकार और साहित्यकार दोनों का उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विकृतियों का पर्दाफाश कर एक स्वास्थ्य एवं आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना है। दोनों का विषय यथार्थ है।' [3] दो-तीन दशकों पूर्व पत्रकार अधिकांशतः साहित्यकार भी होते थे किंतु यह स्थिति अब बदली है। इसका परिणाम यह हुआ है कि अब समाचार पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य का कोना सिमट रहा है। पाठकों को इससे क्षति पहुंच रही है क्योंकि उन्हें श्रेष्ठ साहित्य की उपलब्धता अपने समाचार पत्र पत्रिकाओं में नहीं हो पा रही है। भूमंडलीकरण के युग ने महानगरों ही नहीं बल्कि अंचल की पत्रकारिता को भी प्रभावित किया है। आज आंचलिक हिंदी पत्र पत्रिकाएं भी विज्ञापन वाद से बुरी तरह से प्रभावित हैं।

'आज आंचलिक पत्रकारिता पहले की तरह सहज, सपाट नहीं रह गई है। यह काफी जटिल बन चुकी है क्योंकि सुदूर देशों में स्थित बहुराष्ट्रीय आर्थिक, सामरिक और राजनीतिक सत्ता केंद्रों द्वारा लिए जा रहे निर्णयों से भारत के अंचल प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित हो रहे हैं।'[4] स्पष्ट है कि बाजारवादी व्यवस्था में साहित्य सामग्री को विशेष स्थान प्राप्त नहीं होता क्योंकि इससे बाजार का कोई भला नहीं होता। यद्यपि समाज के लिए साहित्य का होना बहुत आवश्यक है फिर भी समाचार पत्र पत्रिकाओं में साहित्यिक दृष्टि में न्यूनता आ रही है।

निष्कर्ष

आंचलिक हिंदी पत्रकारिता का यह तो सत्य है कि इसमें साहित्य के लिए स्थान निरंतर कम हो रहा है। इसके लिए समाचार पत्र पत्रिकाओं की प्रबंधन और संपादन तो उत्तरदाई है साथ ही पाठक भी अपने दाइत्व से मुंह नहीं मोड़ सकते। समाचार माध्यम अब पत्र पत्रिकाओं को उत्पाद की दृष्टि से देखने लगे हैं। इसमें पाठक की भूमिका कंज्यूमर अर्थात उपभोक्ता की है। अतः पाठकों की मांग पर सामग्री प्रदान करने का समाचार पत्र पत्रिकाओं के प्रबंधन का अधिक आग्रह रहता है। वर्तमान समय में संचार की माध्यम विकसित अवस्था में हैं। इंटरनेट मीडिया की माध्यम से त्वरित संदेश केक स्थान से दूर से स्थान तक पहुंचाया जा सकता है। पाठकीय प्रतिपुष्टि के लिए यह अच्छी स्थिति है। अब पाठक समाचार पत्र पत्रिकाओं के प्रबंधन से अपनी रुचि की सामग्री

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

का आग्रह और मांगकर सकते हैं। यदि पाठक प्रबंधन से गंभीर साहित्यिक सामग्री की मांग करें तो भी स्थिति बदल सकती है। इससे समाचार पत्र पत्रिकाओं की पृष्ठों पर साहित्य का सिमटता कोना पुनः सुव्यवस्थित एवं पाठकीय अभिरुचि की अनुरूप हो सकता है और समाज को इससे गंभीर साहित्यिक सामग्री की प्राप्ति हो सकेगी। इसके लिए समाचार पत्र पत्रिकाओं के प्रबंधन और संपादक को को भी पाठकीय प्रतिपुष्टि की प्रतीक्षा किए बिना अपने भाषाई एवं सामाजिक सरोकार की चिंता करते हुए साहित्यिक सामग्री हो उचित स्थान प्रदान करना चाहिए। इससे साहित्य के साथ ही समाज का शुभ भी होगा। समाचार पत्र पत्रिकाओं को इस धारणा को बदलना होगा कि 'पत्रकारिता में साहित्य को स्थान नहीं है।'[5]

संदर्भ ग्रंथ

1. मीडिया और हिंदी: बदलतती प्रवृत्तियां, डॉ. जी प्रवीणा, संपादन- रविंद्र जाध, केशव मोरे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. मीडिया साहित्य और संस्कृति, माधव हाड़ा,
3. हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ रमेश कुमार जैन
4. आंचलिक संवाददाता, सुरेश पंडित, मधुकर खेर, संपादक रामशरण जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
5. पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

© RRIJM 2015, All Rights Reserved